अंतिम किस्त

महियारपुर कामत से जो आदमी दौड़ता हुआ यह खबर लाया था उसकी घिघ्घी बँधी हुई थी और वह भय से थर–थर काँप रहा था। गाँव के लोग इस अप्रत्याशित खबर से स्तब्ध थे। छेदन भगत की पतोहू कमली कलेजा कुटती हुई चीत्कार कर उठी थी। अर्द्ध रात्रि के सन्नाटे में उसके आर्तनाद से पूरा मुसहरी टोला दहल गया था। 'माजरा क्या है' यह जानने के लिए हर कोई दौड़ता हुआ छेदन भगत के घर की ओर चला आ रहा था। पाँच कोस दूर से खबर लाने वाला खबरिया पैदल भागता हुआ आया था – उसका गला सूख रहा था – उसके भीतर इतनी शक्ति नहीं थी कि वह दुबारा फिर किसी को पूरा वृत्तांत बताता।

बदहवासी की स्थिति में हाँफते हुए उसने जो हाल बयान किया था उसका संक्षेप सार यही था कि महियारपुर कामत की जिस जमीन को लेकर सूर्यदेव चौधरी और छेदन भगत के बीच वर्षों पहले से जो विवाद छिड़ा था, आज उसका चरम घटित हो गया।

किसी को दूर–दूर तक ऐसी अनहोनी की आशंका नहीं थी। बेचन भी कहाँ जानता था कि गरीबों के हक की लड़ाई ऐसी दुर्दांत होती है ?

वैसे इस सच को महियारपुर पंचायत के सभी लोग जानते हैं कि सूर्यदेव चौधरी के महियारपुर कामत की बीस बीघा जमीन से सटे गढ़ैया पोखर के बगल में छेदन भगत की साठ बीसवां बँसबट्टी की जमीन चकबंदी के दौरान सूर्यदेव चौधरी के नाम हो गई थी। बड़े जोत के किसान और उस इलाके के दबंग परिवार होने के कारण उनका दबदबा पूरे गाँव–जवार के लोगों पर रहा है। गाँव–जवार के लोग चौधरी परिवार के पूर्वजों की कहानियाँ जब कहते हैं तो पता चलता है कि आज से साठ सत्तर साल पहले की जमींदारी प्रथा क्या थी और उसमें जुल्म और अत्याचार की कैसी घटनाएं होती थीं। लगान न दे पाने के कारण सूर्यदेव चौधरी के परबाबा कितने असामियों को कोड़े और जूते से पिटवाते जीवन भर बेगार खटवाते रहे। आज उस परिवार के आगे की पीढ़ी भी राजनीति, रंगदारी और अफसरशाही सबमें अपना दबदबा बनाकर अपने पूर्वजों के बताये रास्ते पर ही आगे बढ़ रही है।

जमींदारी उन्मूलन के बाद सूर्यदेव चौधरी के बड़े भाई इंद्रदेव चौधरी एक सधे हुए राजनेता बनकर राजनीति में अपने प्रभुत्व का विस्तार करने लगे। उनका राजनीतिक चेहरा और चरित्र तिलस्मी था। चुनावी दंगल में उनके समकक्ष खड़ा होने वाला हर प्रतिद्वंदी उनसे मात खाता रहा। लोकतंत्र की आड़ में उन्होंने सामंतशाही का पुनरूत्थान किया – जातिवाद और संप्रदायवाद के बड़े–बड़े गढ़ और मठ बनाए। धर्म और राजनीति के गठबंधन से सत्ता को हथियाने का गुर उन्हें मालूम था। वे जब तक जीवित रहे इलाके में उनके वर्चस्व का डंका बजता रहा। पाँच साल पहले विमान दुर्घटना में सपत्नीक इन्द्रदेव चौधरी काल–कलवित हो गये । निःसंतान होने के कारण छोटे भाई सूर्यदेव चौधरी के दोनों पुत्रों मणिकांत और विजयकांत को उन्होंने अपना वरदहस्त प्रदान किया था।

उनके वरदहस्त के कारण ही सूर्यदेव चौधरी के बड़े पुत्र मणिकांत मुबंई में सेल्सटेक्स कमिशनर हैं और छोटे पुत्र विजयकांत चाचा के सोहबत में राजनेताओं के दरबारी बनकर बड़ी हस्ती के ठेकेदार और रंगदार। रेलवे का बड़ा–बड़ा ठीका उन्हें मिलता रहता है जिसमें वे गाँव के कई लोगों को अपने पीछे झुलाते रहते हैं। परिवार की इस दबंग पृष्ठभूमि के कारण ही छेदन भगत सूर्यदेव चौधरी से हमेशा दबता रहा है। उनसे अपनी जमीन वापस लेने की हिम्मत जुटाना उसके लिए आसान नहीं था इसलिए उसने पहले बहुत सहुलियत से ही विनती मनौती करके सूर्यदेव चौधरी से अपनी जमीन वापस लेने की कोशिश की। पुरखों की मेहनत से अर्जित उस जमीन के प्रति छेदन भगत के मन में एक रागात्मक मोह था। उसने सूर्यदेव चौधरी से पुश्तैनी उस जमीन की खातिर बहुत निहोरा किया। उसके बाप दादों ने वर्षों चौधरी परिवार की चाकरी की थी – उनके खेत खलिहान जोते–बोये और अगोरे थे – इसी वफादारी के एवज में गढ़ैया पोखर के बगल की जमीन सूर्यदेव

चौधरी के परबाबा ने छेदन भगत के पूर्वजों को दी थी। छेदन ने इन सारी बातों की याद दिलायी लेकिन सूर्यदेव चौधरी टस से मस नहीं हुये। इसका कारण जग जाहिर था। छेदन भगत का बेटा बेचन सूर्यदेव चौधरी की आँखों की किरकिरी था। वह किशोर वय से ही हठी और खुद्दार था। इस खुद्दारी के कारण ही उसने अपने बाप दादा की विरासत में मिली गुलामी के पट्टे को अपने गले से उतार फेंका था। वह सूर्यदेव चौधरी की जमीन पर एक दिन भी हलवाही करने नहीं गया क्योंकि वहाँ जन हलवाहे को 'बन' के रूप में बहुत कम अनाज और नगद के रूप में न्यूनतम मजदूरी भी नहीं दी जाती थी। सूर्यदेव बाबू अपनी जमीन पर परबाबा द्वारा बसाये गये मुसहरी टोला और फकीर टोला को निजी गुलामों की बस्ती समझते थे और मनमानी मजदूरी देते थे। छेदन भगत का जवान बेटा बेचन इसके विरुद्ध आवाज उठाने वाला मुसहरी टोला का पहला युवक था। उसके बाद से मुसहरी टोला और फकीर टोला के लोग गोलबंद होने लगे थे। धनकटनी और रोपनी के समय बस्ती के लोग समूह बनाकर पंजाब हरियाणा की ओर कूच कर जाते और सूर्यदेव चौधरी को बगल के गाँव जवार से आदमी बुलाना पड़ता और दूनी मजदूरी देनी पड़ती। अपने रैयतों के बदलते नस्ल को देखकर उनका खून खौल उठता था। वे इस सबके पीछे बेचन को ही मुख्य अभियुक्त मानते थे।

इसी बीच बेचन एक और दुःसाहस कर बैठा था। एक दिन अप्रत्याशित रूप से वह सुबह–सुबह चौधरी साहब के दालान पर पहुँच गया। उस समय वे अपनी दोनाली बंदूक साफ कर रहे थे। उन्होंने आश्चर्य से बेचन की ओर देखा – आँखों में सुलगते कई प्रश्नों के साथ।

बेचन ने उनके सामने कागज का एक टुकड़ा रखते हुए कहा – 'आपके महियारपुर कामत में गढ़ैया पोखर के बगल में साठ बीसवां बँसबट्टी की जो जमीन चकबंदी के समय आपके नाम पर चढ़ गई थी उसी का कागज है यह – 'ब्लॉक से निकलवा कर लाया हूँ – खुद देख लीजिए आप। राजस्व ग्राम के खाता संख्या 9561 में 60 बीसवाँ जमीन मेरे परबाबा साधु भगत के नाम है। भूमि पैमाइश के समय वही जमीन गलती से आपके खेसरा संख्या 9562 रकवा 58 के नाम चढ़ गई है। आप चाहें तो सरकारी अमीन से पैमाइश की जंजीर गिरवाकर नापी करवा लें।' वह प्रामाणिक दस्तावेज के साथ अपने अधिकार की माँग लेकर उनके सामने ढीठता पूर्वक खड़ा था।

चौधरीजी आपे से बाहर हो गये – ''साला मुसहर ! हमें ब्लॉक का कागज दिखाने आया है। वह बँसबीट्टी की जमीन तेरे दादा परदादा की नहीं – मेरी है। सिलींग में वह जमीन चली जाती इसलिए मेरे परबाबा ने तेरे हरामखोर पुरखों के नाम कर दी थी – इससे क्या वह तेरी हो गई ? तू दावा ठोकेगा उसपर ? उसी जमीन की खातिर तेरा बूढ़ा बाप छेदना रोज मेरे पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाता है – नाक रगड़ता है। मैं दे भी देता उसे – पर तेरी इसी अकड़ के कारण मैंने वह जमीन उसे वापस नहीं दी। कान खोल कर सुन ले तू। उसपर हक मेरा था, मेरा है और मेरा ही रहेगा। हरामजादे, तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे दरवाजे पर आकर यह कागज दिखाने की। अभी निकल इस ड्योढ़ी से नहीं तो भून कर रख दूँगा।''

आवेश और क्रोध से थरथर काँप रहे सूर्यदेव चौधरी की ओर से बिलकुल बेपरवाह बेचन उसी हठी मुद्रा में अडिग खड़ा कहता गया – ''यह अंधेर नहीं चलने वाला है चौधरी साहब – कागज मेरे नाम का है – उसे तो देना ही पड़ेगा।''

उसके प्रतिरोध का स्वर काफी ऊँचा था जिसे सुनकर चौधरीजी की आँखें दहक उठीं।

अचानक चौकी पर रखी अपनी दोनाली बंदूक उसकी छाती पर तानकर वे गरज उठे – ''तू मुझे धमकी देगा – तेरी इत्ती मजाल ? साला मादर ––––– तुझे भुनकर रख दूँगा मैं।''

इस गर्जना को सुनकर घर के नौकर–चाकर और सारे सदस्य बाहर निकल आये थे। कुछ क्षण में ही वहाँ लोगों की भीड़ जुट गई थी। भागता हुआ छेदन भी पहुँचा था। आते ही बेटे की छाती पर तनी बंदूक को देखकर वह सूर्यदेव चौधरी के पाँवों पर लोट गया – ''बच्चा है मालिक – दिन दुनिया नहीं समझता – भूलचूक माफ कर दीजिए – नहीं चाहिए हमें कोई जमीन–जत्था – मजूरी करके ही जीवन बसर हो जायेगा हमारा।''

''बापू मेरी खातिर ऐसे न गिड़गिड़ा तू ! बहुत पाँव सहला लिये इनके – तब भी चरणोदक न मिला तुझे

– अब छोड़ दे इनके पाँव – कानून ऊपर है इन सबसे ––– ''

''बेचना ऽ ऽ ऽ ––– चुप हो जा हरामजादे नहीं तो मुँह तोड़ दूँगा तेरा'' – छेदन भगत बाय के झोंके में उठकर बेटे की गर्दन पकड़कर उसे बाहर की ओर धकेलता ले गया। सूर्यदेव चौधरी गुस्से से थरथर काँप रहे थे। उनके चचेरे भाई भतीजे उन्हें शांत करने की कोशिश कर रहे थे। संयोग से सूर्यदेव चौधरी के छोटे बेटे विजयकांत मेट्रो रेलवे के ठीके के सिलसिले में दिल्ली गये हुए थे, नहीं तो आज बेचन यहाँ से सही सलामत नहीं लौटता। कानाफूसी करते लोगों में बेचन की हिम्मत को लेकर आंतरिक तोष और सहमति थी, पर ऊपर से वे उसके दुःसाहस पर नाराजगी प्रकट कर रहे थे।

उस घटना के बाद छेदन भगत अपने बेटे को लेकर बहुत डर गया था। उसे हर वक्त यह अंदेशा लगा रहता कि किसी दिन बेचन के साथ कोई अनिष्ट न घटित हो जाये। उसकी तो दुनिया ही उजड़ जायेगी। उसके दो छोटे–छोटे बच्चे टुअर हो जायेंगे। जवान बहू की जिनगी पहाड़ हो जायेगी। आशंकित भय से उसका कलेजा धड़कता रहता, आँखें पनीली होती रहतीं।

उसके कलेजे में एक हूक की तरह यह डर घर कर गया था। इस बेटे को लेकर उसने बहुत दुःख काटे हैं। पाँच–पाँच बेटों में एक इसी को भगवान ने आँखों के सामने रखा। सब एक–एक कर बिला गए। छाती का दूध बार–बार छाती में सुखाती बेचन की माँ तो जैसे पत्थर ही हो गई थी। बेचन जब हुआ तो दहाड़ मार कर रोती हुई बोली – ''एकरा बचावे के छौ त लौकी झींगा सनक बेच दहु केकरो से – नै त इहो नै बचतै – हे परमेसर – हे दीनानाथ – हे छठी मैया – दूध से भिंजल अँचरा से तोर पैड़ा (रास्ता) निपबो – हे सुरूज देवता – जिया दहु एकरा के।'' (अगर इसे बचाना है तो लौकी झींगा की तरह इसे किसी के हाथों बेच दो – नहीं तो ये भी नहीं बचेगा – हे परमेश्वर अब कितना दुःख दोगे – हे छठी मैया दूध से भींगे आँचल से तुम्हारा रास्ता लीपूंगी। हे सूर्य देवता, इसे जीवित रखो ।)

उसके उस कातर विलाप का स्वर आज भी गूंजता है छेदन के कानों में। नवजात बेटे को टोकरी में लेकर वह दीनदयाल मास्टरजी के घर सीधे चला गया था – ''मास्टरजी मोल ले लीजिए इस अभागे को। दुखियारी माँ का बच्चा है। शायद इस टोटमा से सुगना की कोख न उजड़े – जी जाये हमारा बच्चा।''

छेदना के आँसुओं से भरे हकलान हुये चेहरे को देखकर मास्टरजी ने बच्चे को टोकरी से उठाकर अपने कलेजे से लगा लिया था। उनकी पत्नी ने पचास रूपये के नोट से बच्चे को निहुछ कर कहा था – ''छेदन , तेरा यह बच्चा मैंने मोल ले लिया। अब यह बेचन तेरा नहीं – मेरा और पूरे गाँव का है।''

छेदन भगत की आँखें अछोधार बरसने लगी थी। उसी दिन से उसके बेटे का नाम बेचन पड़ गया। लोक प्रचलित टोटमें से सुगना के भीतर की आस्था फलिभूत हुई। बेचन तो बच गया लेकिन काल कलवित बच्चों का दर्द, गरीबी और बीमारी ने सुगना के जीने की शक्ति छीन ली। छेदन भगत की दुनिया उजड़ गई – सुगना के बिना जीवन विकराल हो गया।

तब से एक लंबा समय बीत गया। बिन माँ के दो साल के बच्चे को कलेजे से लगाकर छेदन ने कितने दुःख उठाकर उसकी परवरिश की – इसे उसके सिवा कौन समझ सकता है। बेचन को वह एक पल के लिए भी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देता। खेत की मेड़ पर बेटे को बोरा की चट्टी पर सुलाकर वह भूपतियों की जमीन में जन बनिहारी का काम करता। सुबह सबेरे डेकची में गोलहथ्थी (माड़–भात) बना कर अथवा अपने हाथ से पकाई गई रोटी के छोटे–छोटे टुकड़े पानी में डुबोकर वह बेटे को खिलाता। दोपहर के लिए भी अंगोछे में बाँधकर कलेवा ले जाता। मजदूरी में मिले पैसे से कभी बिस्कुट तो कभी फल ले आता। शाम को गाय दुहने के एवज में मास्टरजी के घर से बेचन के लिए एक पौवा दूध हर रोज मिलता था, जिसे औंटकर वह सिरहाने कटोरी में ढक कर रख देता और आधी रात में जब भूख से बिलबिलाता बेचन जागता तो सिरहाने रखी कटोरी उसके मुँह से लगाकर वह जतन से बेटे को दूध पिलाता, फिर बाँहों पर थपकियाँ देता हुआ उसे सुलाता। बेटे को कलेजे में साटकर उसे सुकून मिलता था पर भीतर से हमेशा एक रूलाई फूटती थी – ''क्यूँ साथ छोड़कर चली गई सुगना – यह तो सीधे–सीधे दगा देना है – तुम्हारे बगैर कितनी कठिन है यह जिनगी ? कब बड़ा होगा तुम्हारा बेचन ? उसे बड़ा होने तक कितनी बार मर–मरकर जिऊँगा मैं ––––– ''

छेदन सचमुच बेचन के लिए मर–मर कर जीता रहा। जीवन के दुर्घर्ष संघर्षों को अकेले झेलते हुए उसने मौसम के हर प्रहार से बचाया था, अपने कलेजे के टुकड़े को। आज उसी बेटे की छाती पर दोनाली तनी देख उसके पाँव के नीचे की जमीन खिसक गई थी। बेटे की जान से बढ़ कर उसके लिए नहीं है पुरखों की जमीन–जत्था। भाड़ में जाए गढ़ैया पोखर की वह जमीन। उसे नहीं चाहिए वैसी जमीन, वैसा हक जो बेटे की जान का गाहक बन जाए। उसने उसी दिन अपने माथे पर बेचन का हाथ रखवा कर किरिया खिलवाया कि वह दुबारा फिर कभी सूर्यदेव चौधरी से इस जमीन के लिए रगड़ा नहीं करेगा, नहीं तो बाप का मरा मुँह देखेगा वह।

''मैं जहर माहुर खा कर या रेल की पटरी पर सो कर अपनी जान दे दूँगा बेचन – फिर मेरी लाश उसी जमीन पर फूँक देना – तेरे कलेजे को ठंडक पड़ जायेगी।''

उसकी धमकी में रूलाई का स्वर फूट पड़ा था। वह दोनों हाथों से अपना सर पकड़ कर मड़ैया के ओसारे पर निढ़ाल सा बैठ गया था।

बेचन के भीतर एक ज्वार सा उठा। व्यवस्था से थके–हारे अपने निरीह असहाय बापू के सामने जमीन के उस कागज को चिन्दी–चिन्दी कर फेंकते हुए उसने भरे कंठ से कहा – ''लो, आज के बाद कभी पुरखों की गुलामी के एवज में मिली किसी जमीन की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखूँगा – लेकिन एक बात सुन ले बापू – अपनी सौगंध देकर तुमने अच्छा नहीं किया। बिना लड़े हथियार डाल देने वाला कायर सिपाही बना दिया मुझे। मैं वह नहीं हूँ बापू। मैंने बचपन से तुम्हें इन बाबुओं के तलवे सहलाते देखा है। कम मजदूरी पाकर भी चुप रह जाना – उनकी ज्यादतियों के विरुद्ध कभी कोई आवाज न उठाना – यह कैसा स्वभाव है तुम्हारा ? तुम्हारी रगों में बहने वाला खून कभी गर्म क्यों नहीं होता बापू ? अपने जीवन के दुःख और अभावों के पीछे छिपे सच को कभी खोजने जानने की कोशिश नहीं की तुमने। हमेशा अपने भाग्य को कोसा, जीवन को नियति का लेखा माना, लेकिन यह सच नहीं है। मैं जिस सच को देखता हुआ बड़ा हुआ हूँ, वह कुछ और है। मेरे धर्म पिता मास्टर दीनदयाल ने मुझे सच खोजना सिखलाया है। आज वे नहीं हैं, लेकिन उनका पाठ मुझे कंठस्थ है। मैं तुम्हारी तरह इनके अत्याचार और अन्याय को चुप रह कर नहीं सह सकता। मास्टरजी ने मुझे स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया है। सामंती समाज की पहचान कराई है। अपने लिए न सही लेकिन वंचितों–शोषितों के लिए तो मैं लडूँगा ही और हक की वह लड़ाई छाती आगे और पीठ पीछे करके ही लड़ी जाती है बापू – वहाँ तुम मुझे सौगंध देकर नहीं रोक सकोगे ———— ।''

उसके कंठ में पानी का हहराता स्वर था – अपनी बात कह कर वह अपने समय के एक कठिन कार्यभार के निर्वाह के लिए दृढ़ संकल्प के साथ उठ खड़ा हुआ ।

छेदन रेत भरी आँखों से बेटे को जाते देखता रहा ।

उसके बाद ही 'आवाम मुक्ति संघर्ष' की पहली बैठक महियारपुर कामत में हुई थी जिसमें दस गाँव के लोग इक्कठे हुए थे। कम जोत के किसान, बटाईदारी पर खेत जोतने वाले मजदूर, कामगार महिलाएँ, पुरुष, बुजुर्ग सबका एकजुट गोलबंद होना महियारपुर कस्बे के लिए उद्वेलन भरी एक बड़ी खबर थी। इस गोलबंदी से गाँव के दबंग राजपूतों और भूमिहार पट्टी के लोगों के कान खड़े हुए थे।

उस बैठक में कम मजदूरी, बटाईदारी नीति, जमाखोरी, मालिकों का अमानवीय सामंती व्यवहार जैसे मुद्दों पर गरमागरम बातें हुई थीं, फिर आपसी सहमति से कुछ रणनीतियाँ भी तय हुई थीं। अराजक तंत्र से उपजी मानवद्रोही स्थितियाँ लम्बे समय से गरीबों पीड़ितों के भीतर लावा की तरह सुलग रही थी – एकजुट स्वर ने इसे विस्फोटक बना दिया। अचानक पूरे इलाके में भूपतियों की जमीन पर लाल झंडे गाड़ें जाने लगे, सार्वजनिक स्थानों पर धमकी भरी घोषणाएँ चिपकाई जाने लगीं।

जिस दिन भूपति सूर्यदेव चौधरी की महियारपुर कामत वाली जमीन पर लाल झंडे गाड़ने की रणनीति

तय हुई थी, उस दिन इसकी सूचना घर का भेदी लंका डाहे वाली कहावत को चरितार्थ करता रामरतन पासवान नाम का एक युवक उन्हें दे गया था, जिसे सुनकर वे आपे से बाहर हो गये थे ———

''ये साले मुसहर–धांगड़ के नये बोनसाई हमारे विरोध में गाँव वालों को गोलबंद कर रहे हैं – इनकी औकात तो मुझे बतानी ही होगी। मुझे मालूम है, इन सबका लीडर कौन है – छेदन भगत का बेटा बेचन, आग मूत रहा है इन दिनों – वही धरना प्रदर्शन के लिए उकसा रहा है सबको – हरामजादे को नहीं पता कि चीटियों के पर निकलने का अंजाम क्या होता है।''

चौधरीजी की क्रोधाग्नि भड़क उठी थी। जिसे लक्ष्य कर, राम रतन प्रेम से पूरी कथा बाँचने लगा – ''चौधरी चच्चा ! आज उस सभा में बेचन के साथ फकीर टोला का माओवादी मियांदाद और इमरान भी आया था। वे लोग गाँव में बन रही कैमिकल फैक्ट्री के लिए लीज पर ली गई जमीन का पट्टा रद्द करवाने के लिए लोगों को तरह–तरह की बातें समझा रहे थे।

सूर्यदेव चौधरी की आँखों में बिजली की तड़प कौंध गई।

''क्या मतलब है तुम्हारा – खोलकर सारी बातें कहो।''

रामरतन कहने लगा – '' चच्चा, वे कह रहे थे कि सरकार ने गरीब–गुरबों को सब्जबाग दिखा कर – उन्हें बहला फुसलाकर सौ एकड़ की जो जमीन 'गाँव जवार मंडी हाउस' निर्माण के लिए छोटे किसानों से मोल ली थी, उस जमीन में से साठ एकड़ जमीन का सौदा किसी दवा निर्माता कंपनी ने 30 वर्ष का पट्टा लिखवा कर करवाया है और यह सौदा जिला प्रशासन के साथ साठगाँठ करके मणिकांत भैयाजी के थ्रू हुआ है – क्या यह सच है चच्चा ?

सूर्यदेव चौधरी की भृकुटी तन गई।

''साले सब, कहाँ–कहाँ से सूँघते रहते है। अगर यह सच भी है तो उनके बाप का क्या जाता है। उन्हें तो जमीन का मुवावजा मिल ही गया है सरकार से।''

''लेकिन वे तो कह रहे थे कि मुआवजा अभी आधा भी नहीं मिला है और उस जमीन का बड़ा हिस्सा लीज पर दे कर सरकार, जिला प्रशासन और चौधरी परिवार सभी दुहरा मुनाफा कमाने और गरीबों को तबाह करने का नया तरीका ईजाद कर रहे हैं। मणिकांत भैया के बारे में वे सब बहुत अंटसंट बोल रहे थे।''

''क्या बोल रहे थे मणि के बारे में ?'' चौधरीजी का चेहरा तनने लगा था।

रामरतन थोड़ा असमंजस में था – ''कहें कि नहीं ? कहीं भेद खुल गया तो ?''

''क्या सोच रहा है तू – बता न – क्या कह रहे थे मणि के बारे में ?''

चच्चा वे कह रहे थे कि चौधरजी का बेटा मुबंई में सेल्सटैक्स कमिश्नर है लेकिन बिहार में वह मुबंई की दवा कंपनी का दलाल है। जिला प्रशासन से साठगाँठ करके वही हमारी जमीन का पट्टा लिखवाया है और दवा फैक्ट्री बनवा रहा है मुनाफा कमाने के लिए। जिस जमीन पर सरकार 'गाँव जवार मंडी हाउस' बनवा कर हमारी फसलों और पैदावारों के लिए बाजार विकसित करने जा रही थी – उस जमीन पर अब मुंबई के दवा कंपनी का मालिकाना हक हो गया है – वह भी तीस वर्षों के लिए। जरा सोचिए भाईयों गरीबों के हक को मारकर वे लोग अपना बिजनेस खड़ा कर रहे हैं। यह कितना बड़ा फरेब है हमारे साथ।

चच्चा ! हम क्या बतावें आपको – वे कैसी–कैसी बातें गढ़ कर उन्हें उकसा रहे थे। मैं तो चुपचाप पीछे खड़ा उनकी बातें सुन रहा था।

''अरे तू खोलकर बता तो सही और क्या कह रहे थे सब ?''

''मियांदाद और बेचन के भड़काऊ भाषण से वहाँ की हवा बहुत गरम हो गई थी चच्चा।''

''बेचन और उसके चेले–चट्टे कह रहे थे – 'सरकार, प्रशासन और दबंग बाबुओं की यह संधि योजना को समझिये भाईयों। हमारा जीवन किस तरह दाँव पर लगा रहे हैं ये लोग – इसे देखिए। एक ओर तो सरकार उल्लू बनाकर सौ एकड़ जमीन कौड़ी के भाव हम सबसे ले चुकी है, जिसका पूरा मुआवजा भी अभी तक हमें नहीं मिला है। दूसरी ओर उसी जमीन को दबंग लोगों के नाम लीज पर देकर दोहरा मुनाफा कमाने का रास्ता बना चुकी है। इस फैक्ट्री से जो बिषैला रसायन निकलेगा वह कहाँ जायेगा ? इसपर भी गौर

कीजिए, वह सीधे–सीधे शेरपुर और विशनपुर के गाँव तक फैलेगा और तरह–तरह की बिमारियों से हम सब मरेंगे।

उनकी बातों से लोग आवेश में आने लगे थे। तभी बेचन के साथ मियांदाद और इमरान भी आगे बढ कर कहने लगा – ''केवल इतना ही नहीं है और भी बहुत सारी मुश्किलें आने वाली हैं हम सब के लिए।''

''सूर्यदेव बाबू के बड़े बेटे मणिकांत चौधरी अब इस जमीन की चौहदी घेर रहे हैं। इस घेराबंदी से हमारे लिए दूसरी मुश्किलें भी आयेंगी। इस घेराबंदी से शेरपुर विशनपुर और बथनाहा पंचायत के लोगों को तरह–तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। जिस रास्ते आज तक बस्ती के लोग बाजार, अस्पताल, कब्रिस्तान आते जाते रहे हैं, वह मुख्य मार्ग सीलबंद होने जा रहा हैं। इसके बंद हो जाने से लोगों को कोसी की सूखी रेत लांघते हुए सेवई पट्टी का बड़ा चौर (जंगल) पार करके शहर जाना होगा। लेकिन जब सावन–भादो की मुसलाधार बारिश होगी और नेपाल का पानी खोल दिया जायेगा, तब कोसी मैया का बलुआही धार वाला रास्ता भी उफनता सागर बन जायेगा। ऐसे में गाँव के लोग किस रास्ते हाट–बाजार, अस्पताल और कब्रिस्तान जायेंगे ? कैसे अपनी पैदावार की बेच–फरोख्त करेंगे ? बीमार को खटिये पर लाद कर कैसे अस्पताल पहुँचाएंगे ? भाईयों ! अब आप लोग खुद सोचिये यह सब। खुदा के घर चले गये बंदों को दफनाने के लिए कब्र की दो गज जमीन तक भी नहीं पहुँच सकेंगे हमलोग।''

''ऐसा उपद्रवी भाषण दे रहे थे साले सब ?''

चौधरीजी के दोनों होठ टेढ़े होकर काँपने लगे थे।

''हाँ चच्चा, मैं झूठ क्यों बोलूँगा – उस मीटिंग में मैं भी तो उन्हीं की तरफ से शामिल हुआ था ना।''

''अरे तू उधर का नहीं – तू तो इधर का है।''

''हाँ चच्चा ! वो तो मैं हूँ ही – तभी तो आपके पास आया हूँ सब बताने।''

''चच्चा और क्या बताऊँ, उन सब की बातों से फकीर टोला के लोग तो पूरी तरह भड़क उठे और तैश में आकर गरजने लगे – ''हम सूर्यदेव चौधरी को यह जमीन हरगिज–हरगिज नहीं घेरने देंगे। कैमिकल फैक्ट्री के लिए तीस वर्ष का पट्टा उनके बेटे मणिकांत चौधरी ने जिला प्रशासन की मिली भगत से गुपचुप तरीके से अपने नाम लिखा लिया है – इसके खिलाफ हम जन आंदोलन करेंगे।''

''चच्चा ! मैं आपको क्या बताऊँ – बेचन और उसके साथियों के प्रवचनों का असर आज की सभा में कितना हुआ है। वे हस्ताक्षर अभियान चलाकर, इसके विरोध में राज्य सरकार को आवेदन देने जा रहे हैं यही सब देख सुन कर मैं सीधा वहाँ से उठकर आपको सबकुछ बताने चला आया हूँ। आप मणिकांत भैया को जरूर इन सारी बातों से अवगत करा दीजिए। मुम्बई में बैठ कर, यहाँ की बदलती परिस्थितियों को वे नहीं समझ सकते।''

''अच्छा ! चलता हूँ चच्चा – कोई नई खबर होगी तो आपको सूचित कर दूँगा।'' रामरतन भूसे के ढ़ेर में चिंगारी रख कर उठ खड़ा हुआ।

सूर्यदेव चौधरी के भीतर भूसा के धुँआने और सुलगने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी, लेकिन समय–सजग उनकी चेतना प्रतिकूल समय को देखते हुए उसके जोड़–तोड़ में लग गई।

उन्होंने जाते हुए रामरतन को रोक कर कहा – ''रामरतन तुम पर भरोसा है। तुम तो जानते हो – मणिकांत तुम्हें कितना मान देता है। उसने पहले से कह रखा है कि यहाँ की फैक्ट्री का कार्यभार वह तुम्हें ही सौंपेगा – विजयकांत को तो तुम देख ही रहे हो – दिल्ली में मेट्रो रेलवे के ठेके को लेकर वह इन दिनों कितना व्यस्त है। फैक्ट्री के लिए तो हमें एक भरोसामंद आदमी चाहिए ही। और वह तुमसे अधिक कौन हो सकता है ? स्कूल की मास्टरी में घर–परिवार कब तक चला पाओगे ? लेकिन तुम्हारा ख्याल रखेंगे हम।''

रामरतन की आंतरिक अभिलाषा उम्मीद के एक सम्बल से खिल उठी – ''आपका ही तो मुझे भी आसरा है चच्चा। समाज के वंचित वर्ग का होने पर भी मुझपर आप सदा स्नेह बनाए रखते हैं – मणिकांत भैया भी मुझसे वैसा ही अपनापन जताते हैं। बहन की शादी में रूपये पैसे से भी उन्होंने मदद की थी। मैं बेचना की

तरह एहसानफरोश नहीं हूँ चच्चा। सब याद रहता है मुझे – आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहूँगा मैं। चलते हुए एकबार फिर याद दिला रहा हूँ – भैयाजी को सबकुछ आज ही बता दीजिएगा।''

रामरतन चला गया लेकिन उसकी बातें सूर्यदेव चौधरी के भीतर घुमड़ती रहीं। उन बातों का एक निर्णायक जबाब ढूढ़ना उनके लिए बहुत कठिन हो गया था। अपने विरुद्ध होते समय के परिदृश्य में वे लगातार अपने को हारता महसूस कर रहे थे। फैक्ट्री के निर्माण को लेकर गाँव में विरोध और तनाव का जो माहौल बन गया था, उसने जिला प्रशासन की नींद और चैन हराम कर रखा था। अराजक तंत्र से उपजी मानव द्रोही स्थितियाँ लोगों के भीतर एक आक्रामक तेवर को जन्म दे रही थी। लागातार धरना–प्रदर्शन, हस्ताक्षर अभियान चलाकर लोग तीस वर्ष का पट्टा रद्द करवाने के लिए प्रशासन पर दबाब बना रहे थे। कथा का नायक बेचन और उसके साथी जनजीवन पर मंडराते संभावित खतरों को लेकर लोगों को एकजुट करने में लगे थे और एकजुट हुए लोग जीवन से जुड़े सवालों का जबाब हर दिन प्रशासन से माँग रहे थे। इन सबका नतीजा यह हुआ कि सूर्यदेव चौधरी के बेटे मणिकांत चौधरी की केमिकल फैक्ट्री पर ग्रहण लग गया। अब तक फैक्ट्री के आलीशान भवन और उसके भीतर लगे आधुनिक उपकरणों में कराड़ों की पूँजी लग चुकी थी। बीच में ही काम बाधित हो जाने से चौधरी परिवार को बहुत नुकसान हुआ था। उनके सारे मनसूबों पर पानी फिर गया था। इस बीच मणिकांत चौधरी कई बार मुंबई से गाँव आये। जिला प्रशासन से मिलकर इस लाक्षागृह से निकलने के लिए सुरंग खोदने की बात भी सोची लेकिन चुनाव की सरगर्मी शुरू हो जाने के कारण समय प्रतिकूल ही बना रहा और उन्हें मुंबई लौट जाना पड़ा।

इन सारी बातों को याद करके सूर्यदेव चौधरी उस रात इतने अशांत हो गये थे कि फोन लगाकर बहुत व्यग्र स्वर में उन्होंने बेटे से कहा – ''मणि, मैं बहुत परेशान हूँ। तुम मेरी इस परेशानी और दर्द को नहीं महसूस कर सकते, जो गाँव में अपनी प्रतिष्ठा के हनन के कारण मेरे भीतर नासूर की तरह दिन रात टभकता रहता है। हर घड़ी मुझे ऐसा लगता है जैसे पूरखों की अर्जित मान प्रतिष्ठा की बुलंद इमारत ढ़ह गई है और मैं मलवों के नीचे कहीं दब गया हूँ । चौधरी परिवार के आन–बान–शान को जिस तरह कुचला गया है, वह भूलने वाली बात नहीं हैं बेटा। लात के नीचे रहने वाले मुसहर धांगड़ की हिम्मत तो देखो – धरना प्रदर्शन करके हमारे कारखाने का काम बंद करवा दिया और अब गढ़ैया की कामत वाली जमीन पर लाल झंडा गाड़ने की भी मंशा बना चुके हैं। रामरतन आया था । बहुत बातें बता कर गया है अभी वह। माओवादी मियांदाद, इमरान और हरिहर पासवान भी बेचन का साथी बना है इन दिनों। कुछ सोचो मणि ! कुछ करो। यह अपमान मेरी छाती पर किसी शिलाखण्ड की तरह आकर बैठ गया है। मैं इस स्थिति में जिंदा पड़ा रहूँ यह नहीं हो सकता।''

पिता की इस कातर आवाज से मणिकांत चौधरी भीतर तक हिल गये – ''बाबूजी आप अधीर मत होइये। कोशी प्रमंडल में मेरा मित्र अनुपम मलहोत्रा डी. आई. जी. के रूप में योगदान करने वाला है। आज ही ट्रांसफर लिस्ट का मुझे पता चला है। अब सबकुछ ठीक हो जायेगा। पुलिस फोर्स के संरक्षण में फैक्ट्री का काम जल्द ही मैं शुरू करवा लूँगा और पंचायत चुनाव के तुरत बाद ही उसका उद्घाटन किसी बड़े मंत्री के द्वारा होगा – आप निश्चिंत रहिए और लाल झंडे गाड़ने वाली बात जो आप कह रहे हैं न, तो वही लाल झंडा उन हरामजादों की कब्र पर गड़ेगा।''

सूर्यदेव चौधरी के दिल को थोड़ी राहत मिली। उन्होंने हुलस कर कहा – ''विजयकांत को मैं दिल्ली से कुछ दिनों के लिए बुलवा लेता हूँ – लोग उससे भय खाते हैं – वह अगर यहाँ रहता तो मजाल थी कि बेचना या कोई और इस तरह हमारे विरुद्ध ––––– ''

मणिकांत ने बीच में ही पिता की बात काटते हुए कहा – ''बाबूजी आप यह भूल हरगिज मत कीजिएगा – विजयकांत को मेट्रो का बड़ा ठीका मिला है – उसे वहाँ काम करने दीजिए – गाँव आकर वह बनता काम बिगाड़ेगा। आप जानते हैं उसका खून गरम है – छोटे लोगों का ताव वह बर्दास्त नहीं कर सकता – उसे इस

प्रोजेक्ट से दूर ही रखिए। रामरतन है न, वहाँ आपके साथ – मैं उसे सब समझा दूँगा – वह सारा कुछ मैनेज कर लेगा – आप बहुत परेशान मत होइये।

सूर्यदेव चौधरी बहुत दिनों बाद उस रात निश्चिंत होकर सोये। महीनों से एक करवट सोया हुआ समय भी पलटा था। उन्होंने राग भरी आँखों से उसकी ओर देखा। उनके भीतर का आवेग धीरे–धीरे थमने लगा।

इस बीच थमे हुए उस आवेग के बाहर ताकत के तंत्र ने अपने को साबित करने के लिए जोड़–तोड़ की कई रणनीतियाँ तय कीं। सूर्यदेव चौधरी का नाम अप्रत्याशित रूप से विधान सभा के प्रत्याशी के रूप में घोषित हुआ और बेचन की कथा की अंतिम परिणति तय हो गई, जिसका आभाष खबरिया ने आपको कथा के आरम्भ में ही करा दिया है। अब आप इस कथा की तफसील का शेष हिस्सा अखबारी खबर की तरह सुबह की चाय के साथ पढ़ सकते हैं – उपमुख्य संवाददाता, मुजफ्फरपुर

''माओवादियों ने विधान सभा प्रत्याशी एवं इलाके के बड़े भूपति सूर्यदेव चौधरी के महियारपुर कामत पर गाड़े लाल झंडे – घर पर किया कातिलाना हमला।''

मोटे–मोटे अक्षरों में लिखे इस हेडलाईन के नीचे घटना का ब्योरा कुछ इस तरह है –

महियारपुर कामत में कल रात माओवादियों ने भूपति सूर्यदेव चौधरी की जमीन पर धावा बोलकर लाल झंडा गाड़ दिये और भूपति के घर को चारो ओर से घेर कर उनपर कातिलाना हमला किया। गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस मौके पर पहुँच गई और उन्हें आतंकी गिरोह से बाल–बाल बचा लिया। डी. आई. जी. अनुपम मलरोत्रा स्वयं टीम के साथ थे। चौधरी जी के फार्म हाउस के बंगले पर कब्जा किये सशस्त्र माओवादियों के साथ पुलिस की तीन घंटे तक जमकर गोलीबारी हुई। अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस कई जगहों पर छापामारी कर रही है।

खबर में प्रत्यक्षदर्शी गवाह के रूप में सूर्यदेव चौधरी के घर में पहले से मौजूद शिक्षक रामरतन का बयान भी छपा था – उसने बताया कि माओवादियों का मुख्य मकसद भूपति की हत्या करना था। उस दिन सूर्यदेव चौधरी अपने फार्म हाउस में एक लंबे अंतराल के बाद आये थे। जिस समय केमिकल फैक्ट्री का काम शुरू हुआ था, उस समय सूर्यदेव चौधरी महीने में पंद्रह दिन वहीं रहते थे लेकिन काम रूक जाने के बाद उनका आना अनिश्चित हो गया था। सूत्रों की माने तो उनके आने की जानकारी माओवादियों को पहले से थी। उस दिन चुनाव के सिलसिले में शेरपुर और विशनपुर से आये लोग चौधरी जी से मिलकर रात आठ बजे लौट गये थे। लेकिन सूर्यदेव बाबू ने आग्रहपूर्वक रामरतन को रोक लिया था। रात दस बजे वे दोनों खाना खाकर अभी सोने की तैयारी में थे, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। रामरतन ने ही आगे बढ़ कर दरवाजा खोला तो चिते की तरह छलांग लगाकर एक नकाबपोश ने चौधरी जी को पकड़ लिया और दूसरे ने उनकी छाती पर बंदूक तान दी। ढ़के चेहरे से झाँकती दो छोटी और गहरी आँखों को देखकर रामरतन के मुँह से हठात निकल गया – बेचन तुम ? तभी पुलिस जीप के सायरन की आवाज से पूरा दृश्य ही बदल गया। रिवाल्वर तानने वाला मियांदाद हड़बड़ी में फायरिंग करता हुआ छत की सीढ़ियों की ओर दौड़ा उसके पीछे बेचन भगत और दूसरे साथी भी भागे। संयोग अच्छा था कि जल्दबाजी में चलाई गई गोली चौधरी जी को नहीं लगकर दीवाल में लगी थी। भागते हुए माओवादियों ने बाहर से घर की कुण्डी चढ़ा दी थी, जिसके कारण भीतर सूर्यदेव चौधरी के साथ रामरतन और फार्म हाउस के नौकर मंगल घंटों बने रहे। उधर छत पर मोर्चा लिए माओवादी लगातार गोलियाँ बरसा रहे थे। गोलीबारी बंद होने पर जब कमरे की कुण्डी खुली तो डी. आई. जी. साहब बाहर पुलिस दस्ते के साथ खड़े थे और छत पर मियांदाद और उसके साथी बेचन की लाश खून से लथपथ पड़ी थी।

रामरतन के आँखों देखे इस हाल के वर्णन से पूरे इलाके में माओवादियों का खौफ गहरा गया था। अखबार के पन्नों में ये खबरें लगातार तीन चार दिनों तक छपती रही। इस घटना के बाद मुसहरी टोला और

फकीर टोला के लोग साँसे भी सहम कर ले रहे थे। फकीर टोला में पुलिस बार–बार इमरान को ढूढ़ने आ रही थी और पूरी बस्ती को धमका कर जा रही थी। चारों तरफ आतंक का एक सन्नाटा छा गया था। छेदन भगत की देह ठठरी बनकर खाट से जा लगी थी लेकिन उसके अचेतन में कुछ बातें बार–बार कौंधती थी – ''मेरा बेटा लाल झंडा गाड़ने कभी चौधरी के खेत पर नहीं जा सकता। खैरात में मिली जमीन को गुलामी का पट्टा कहकर ब्लॉक का कागज फाड़ने वाला मेरा बेटा खुद्दारी की रोटी खाता था – सीना तानकर चलता था। मियांदाद और इमरान की तरह उसे जबरन माओवादी बताकर चौधरी परिवार ने कितनी बड़ी साजिश रची – हमें उजाड़ देने के लिए।'' उसके मस्तिष्क में ऐ अंधड़ चल रही था। उस मनहूस रात के एक दिन पहले रामरतन बेचन से मिलने क्यों आया था ? दोस्त बनकर इतनी बड़ी दुश्मनी साधी ? खुद बुलाकर उसे ले गया और माओवादी का सरगना कहकर पुलिस ने उसे गोलियों से भुन दिया। आह ! मेरा बच्चा ऽ ऽ ऽ ––––मेरा बेटा ऽ ऽ ऽ ––––––।

इधर इस कथा के एक छोटे से सच का जिंदा सबूत लेकर कमली अपने भीतर के अंधेरे में घुट रही थी। वह बेवा हो गई और उसका बेटा अनाथ – उसके कंठ में चीखों का ज्वार उमड़ता लेकिन चीखों के लिए कोई शब्द नहीं होते और वह गश खाकर गिर जाती। शब्दों की काली परछाईयाँ हर समय उसे दबोचे रहतीं – ''बेचन विश्वास करो मेरा, मैं पहले दोस्त हूँ तुम्हारा, फिर चौधरी का। उन्होंने खुद संदेशा भेजकर मुझे बुलवाया और कहा कि गरीब किसानों की जमीन का पूरा मुआवजा वे दवा कंपनी के मालिक से दिलवा देंगे। सरकार आगे पीछे मुआवजा देती रहेगी लेकिन इतने दिनों तक गरीबों का हक मारना उन्हें नागवार लग रहा है। वे कह रहे थे अगर बेचन और उसके संगी–साथी मुआवजा का पूरा पैसा लेकर फैक्ट्री बनने देंगे तो वे जमीन की चौहद्दी भी नहीं घेरेंगे। बाजार–हाट का रास्ता पहले की तरह खुला रहेगा।''

बेचन उखड़ गया था – ''अचानक गरीबों पर वे इतने मेहरबान क्यों हो गये रामरतन ? तुम्हें मुखौटे लगाये चेहरे की कोई पहचान नहीं, मगर मुझे है। इस बार विधान सभा के चुनाव में उन्हें इस क्षेत्र से टिकट मिला है – वे चुनाव के लिए अपनी जमीन तैयार करना चाहते हैं। मुआवजा का पैसा देकर गरीबों का वोट बैंक सुरक्षित करने की चाल है रामरतन – गरीबों के हक का सवाल नहीं। दूसरी बात यह भी आंदोलनकारियों ने घेराव–प्रदर्शन करके उनकी फैक्ट्री का काम बंद करवा दिया है – वे इसलिए भी बेचैन हैं क्योंकि करोड़ों की पूँजी फँसी है उनकी। वे हमे झाँसा नहीं दे सकते रामरतन – कह देना उनसे।''

गहराती शाम में उन दोनों के बीच का संवाद कमली के कानों में पड़ रहा था, लेकिन उसे क्या पता था शतरंजी चाल चलने वाले अपनी चाल में कितने माहिर हाते हैं। अन्ततः बेचन दोस्ती के नाम पर छला गया। रामरतन उसे सुलह कराने के नाम पर लेकर गया। वे आवाजें आग की लता सी उसकी देह से लिपटी हुई थीं और वह धुएँ की लहरियों में दूर तक लहू के धब्बे देख रही थी –––

बेचन के घर में ठंडे चुल्हे पर अदहन का पानी चढ़ा था और कमली का दुधमुहाँ बच्चा उस चुल्हे की मिट्टी कोड़–कोड़ खा रहा था। चुल्हे के पास बैठी कमली पत्थर की मूरत बन गई थी या अपने भीतर धुँआती ज्वालामुखी – कौन जाने ?

पाठक मित्रों ! समय की साँसों में इस कथा की थोड़ी सी धुकधुकी अब इसी रूप में बची है ––– ।

आप चाहें तो धुकधुकाती इन साँसों को अपनी फूँक से प्रज्ज्वलित कर सकते हैं।

हवाओं में खींची लकीरों से या दरख्तों की पत्तियों से यह पूछ सकते हैं कि खेतों पर झँडे गाड़ने वाले ठीके पर आये थे या असली माओवादी थे ? सहृदय मित्रों, आप चाहें तो कथा के उस छोटे सच के जिंदा सबूत की पड़ताल के लिए राजनीतिक–सामाजिक बहस छेड़ सकते हैं, अथवा पत्थर की मूरत बनी कमली की रेत आँखों में ठहरे हुए समय की उस परछाई को पहचान सकते हैं।

बहरहाल ! कहानी की अंतिम किस्त अब आपके हवाले से –––

□ □ □

प्रकाशित – पाखी , अगस्त – 2016